International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(II), October - December, 2025, pp. 88-90

# गाँधी और मानवतावाद

**चेनाराम***

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय बांगर महाविद्यालय, डीडवाना।

*Corresponding Author: chenarammahala@gmail.com

*Citation: चेनाराम. (2025). गाँधी और मानवतावाद. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(II)), 88–90.*

## सार

*महात्मा गाँधी विश्व को मानवतावदी दृष्टिकोण से देखते थे। उनकी धर्म सम्बंधी धारणा लौकिक थी और वे मानवता की सेवा को ही वास्तविक धर्म समझते थे। गाँधीजी की विचारधारा का आधारभूत तत्व यह है कि मानव और उससे जुड़ी समस्त समस्यायें नैतिक है। ऐसी स्थिति में हम अपनी अन्तरात्मा के अनुसार कार्य करें तो समाज तथा विश्व में दुःख, संकट तथा समस्याएँ नहीं रह सकती। गाँधीजी के अनुसार राजनीतिक और व्यक्तिगत कार्यों में अन्तर नहीं है। राजनीति और नीति एक ही सिक्के के दो पहलू है। राजनीति के समस्त दोषों को दूर करने का एकमात्र उपाय यह हैं कि राजनीतिक कार्यों का संचालन मानवीय दृष्टिकोण के अनुसार किया जाये। प्रस्तुत लेख में गाँधी के मानवातावदी विचारों पर चर्चा की गई है।*

***शब्दकोशः*** *आध्यात्मिक, सर्वोदय, अहिंसा, अस्पृश्यता, अन्तर्राष्ट्रीयवाद।*

## प्रस्तावना

महात्मा गाँधी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण मानवतावादी था। वे कहते थे ''मानव क्रियाओं से पृथक कोई धर्म नहीं है।'' वे प्राणीमात्र की सेवा को ही वास्तविक धर्म मानते थे। राजनीतिक चिन्तन में धर्म और राजनीति को पृथक करने का हमेशा से ही प्रयास हुआ है लेकिन महात्मा गाँधी इसके विरोधी थे। उनका मानना था धर्म के बिना राजनीति मृत्यु जाल है। आज विश्व में अनेक प्रकार की समस्याऐं है। राजनीति में भी भ्रष्टाचार, भाईभतीजावाद, अक्सर देखने को मिलता है ऐसी स्थिति में महात्मा गाँधी के मानवतावादी विचार समाज के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो सकते है।

## गाँधी के मानवतावादी विचार

- **राजनीति में आध्यात्मिकता को प्रविष्ट कराना –**महात्मा गाँधी की विचारधारा का मूल आधार उनका आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही है। राजनीति में उनका प्रवेश भी मूलतः इसी भावना के कारण हुआ था। उन्होंने कहा था ''जो यह कहते है कि धर्म का राजनीति से कोई सम्बंध नहीं है, वे धर्म का अर्थ नहीं जानते। धर्म से पृथक राजनीति नहीं हो सकती क्योंकि यह आत्मा का हनन करती है।'' धर्म मानव के सभी कार्यों को एक नैतिक आधार प्रदान करता है। उनका मानना था कि ''व्यक्ति की दो अन्तरात्माऐं नहीं हो सकती एक व्यक्तिगत और दूसरी राजनीतिक। मानवीय कार्यों के सभी क्षेत्रों में एक ही नैतिक संहिता का पालन किया जाना चाहिए।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

- **सत्य और अहिंसा** –गाँधीजी का मानता था कि विश्व की समस्त समस्याओं का हल सत्य और अहिंसा में है। हम जीवन में सत्य का प्रयोग करे तो हम किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकते । इसलिए सत्य और अहिंसा दोनों जुड़ी हुई है। किसी व्यक्ति के लिए अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनना ही सत्य और उसके आधार पर वो जो आचरण करेगा उसमें हिंसा हो ही नहीं सकती। सत्य परायण व्यक्ति मन, वचन व कर्म से इसका पालन करें तो समाज और विश्व में कोई समस्या होगी ही नहीं। इसी प्रकार गाँधीजी का मानना था कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से अहिंसक ही है परिस्थितिवश हिंसक हो जाता है। अहिंसा के द्वारा ही समस्त विश्व का कल्याण संभव है। आज विश्व में अधिकतर देशों के पास विनाशक हथियार है जिसमें मानव जाति पर संकट आ सकता है। गाँधीजी के अनुसार इस संकट से अहिंसा का विचार ही बचा सकता है। गाँधीजी के अनुसार अहिंसा का अर्थ हिंसा ना करना ही नहीं है इसके सही अर्थ में प्राणी मात्र के प्रति दुर्भावना का अभाव सम्मिलित है। जो व्यक्ति अहिंसक प्रवृत्ति अपना लेता है वो प्राणीमात्र के प्रति सद्भाव की भावना रखता है। गाँधीजी का मानता था कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का निराकरण भी अहिंसा के माध्यम से किया जा सकता है।
- **सर्वोदय का विचार** –सर्वोदय का अर्थ होता है सबका उदय या कल्याण। महात्मा गाँधी ने सर्वोदय की अवधारणा के माध्यम से समाज के सभी वर्गों के उत्थान की बात की है। गाँधीजी समाज के विभिन्न वर्गों को साथ लेकर चलने की बात अपने आदर्श राज्य के अन्तर्गत करते है जिसमें सभी का कल्याण निहित हो। गाँधीजी की सर्वोदय की अवधारणा केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है सभी प्रकार के जीव जन्तुओं के कल्याण की कामना इसके अन्तर्गत की गई है। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की बात कही है जिसमें ईर्ष्या, द्वेषता, हिंसा, शोषण आदि के लिए कोई स्थान नहीं हो। सर्वोदय की विचारधारा समाज के सभी वर्गों के कल्याण की सोच को आगे बढ़ाती है तथा साथ ही प्राचीन भारत की ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' सोच को दर्शाती है।
- **वसुधैव कुटुम्बकम्** –महात्मा गाँधी मानवतावदी विचारक थे उनकी सोच परिवार, समाज, राष्ट्र से होते हुए अन्तर्राष्ट्रवाद तक जाती है। गाँधीजी के विचारों में हमें राष्ट्रवाद व अन्तर्राष्ट्रवाद के मध्य किसी प्रकार का विरोधाभास देखने को नहीं मिलता बल्कि उन्होंने राष्ट्रवाद व अन्तर्राष्ट्रवाद के मध्य सेतु का कार्य किया है। गाँधीजी का मानना था कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है हमें मानव होने के नाते सभी के साथ सद्भाव रखते हुए जीवन यापन करना चाहिए। यंग इण्डिया में उन्होंने लिखा है कि ''मैं भारतवर्ष का उत्थान इसलिए चाहता हूँ कि जिससे सम्पूर्ण विश्व का हित हो सके।'' इस प्रकार गाँधीजी राष्ट्रवादी और अन्तर्राष्ट्रवादी दोनों प्रकार की विचारधारा को मानने वाले थे।
- **प्रन्यास सिद्धान्त** –महात्मा गाँधी के न केवल राजनीतिक अपितु आर्थिक विचार भी मानवतावाद की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। गाँधीजी आर्थिक विषमताओं को समाप्त करने के पक्षधर थे उनका मानना था कि समाज के सभी वर्गों के लिए आर्थिक अवसर समान होने चाहिए। प्रन्यास सिद्धान्त के अन्तर्गत उन्होंने धानिक वर्ग के लोगों से आव्हान किया कि वो जीवन यापन के लिए आवश्यक धन को ही रखे उसके अलावा शेष धन सम्पति को समाज की धरोहर मानते हुए समाज हित में लगाए। गाँधीजी का मानना था कि धनिक वर्ग को इस हेतु सत्याग्रह द्वारा प्रेरित किया जाना चाहिए हिंसात्मक तरीके के द्वारा उनकी सम्पत्ति छीनने को प्रयास नहीं होना चाहिए। महात्मा गाँधी ने आर्थिक क्षेत्र में समानता लाने हेतु प्रयास सिद्धान्त के साथ–साथ अपरिग्रह पर भी बल दिया। गाँधीजी का मानना था कि मनुष्य को अनावश्यक संग्रह की प्रवृत्ति से बचना चाहिए, जिससे समाज के सभी वर्गों के लिए आवश्यकता की पूर्ति हो सके। उनका मानना था कि हमें सादगीपूर्ण जीवन जीना चाहिए। वो मानवीय इच्छाओं को नियंत्रित करने के पक्ष में थे।
- **अस्पृश्यता का अन्त व वर्ग सहयोग में विश्वास** – महात्मा गाँधी समाज के सभी वर्गों में समानता के पक्षधर थे। उनका मानना था कि जाति, धर्म आधारित भेदभाव उचित नहीं है। गाँधीजी ने समाज के

पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया तथा उन्हें मन्दिर प्रवेश, पूजा आराधना के अधिकार की वकालत की। उनका मानना था कि इसमें इन उपेक्षित वर्गों में आत्मसम्मान की भावना जाग्रत होगी। अछूतों को गाँधीजी ने सम्मानजनक शब्द 'हरिजन' से सम्बोधित किया उनका मानना था कि ये वर्ग ईश्वर प्रिय है। महात्मा गाँधी ने अस्पृश्यता के अन्त के साथ–साथ साम्प्रदायिक एकता, स्त्री सुधार के क्षेत्र में भी अथक प्रयास किए। गाँधीजी ने हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल देते हुए द्विराष्ट्र सिद्वान्त की खिलाफत की। वो देश की समस्त जनता को एकता के सूत्र में बाँधना चाहते थे। गाँधीजी मानवमात्र की सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म मानते थे। उन्होंने धर्म के आधार पर भारत विभाजन का विरोध किया व जगह–जगह हो रहे साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए बहुत प्रयास किए जिसमें उन्हें काफी हद तक सफलता भी मिली। गाँधीजी ने महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु भी बहुत प्रयास किए। उनका मानना था कि स्त्रियों पुरूषों से किसी भी मामले में कमतर नहीं है बल्कि सहिष्णुता, दयालुता, नैतिकता में श्रेष्ठ ही है। गाँधीजी ने समाज में व्याप्त स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार दिलाने की बात कही।

- **अधिकार और कर्त्तव्य** –महात्मा गाँधी का मानना था कि भारत के प्रत्येक नागरिक को विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म और अन्तः करण की स्वतंत्रता, संगठन की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। उन्होंने अल्प–संख्यकों को अपनी भाषा, लिपि, संस्कृति के अधिकार का भी पक्ष लिया। गाँधीजी प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के कानून के समक्ष समान मानने के पक्षधर थे। इन अधिकारों के साथ–साथ उन्होंने कर्त्तव्यों की भी वकालत की थी। गाँधीजी का मानना था कि कर्त्तव्यपालन के बिना अधिकार की कल्पना नहीं की जा सकती है। ''कर्म कर्त्तव्य है फल अधिकार है।'' उनके कर्त्तव्य सम्बंधी विचारों पर गीता की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है।

## निष्कर्ष

महात्मा गाँधी का न केवल राजनीतिक क्षेत्र अपितु मानवता के क्षेत्र में भी महान् योगदान रहा है। गाँधीजी ने तत्कालीन समय की नैतिकता विहीन, भ्रष्टाचार से लिप्त व्यवस्था के खिलाफ जनआन्दोलन का नेतृत्व करके देश को एक नई दिशा दिखाने का कार्य किया है। सत्य, अहिंसा, सर्वधर्मसद्भाव, स्त्री सुधार, अस्पृश्यता विरोध आदि अनेक कार्यों के माध्यम से उन्होंने विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ी है। दक्षिण अफ्रिका की धरती से रंगभेद के विरूद्व शुरू हुआ उनका संघर्ष देश की आजादी के साथ समाप्त हुआ। उन्होंने अहिंसा, नैतिकता, दयालुता, सद्भाव आदि को जीवन का अंग बना लिया। मानवता के क्षेत्र में गाँधीजी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता उनके जैसा मानवतावादी विचारक ही आज के युग में विश्व को संकटों से निकाल सकता है। ''वसुधैव कुटुम्बकम' की उनकी सोच से ही सम्पूर्ण विश्व के मानव का कल्याण सम्भव है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. गाबा, ओ.पी.(2007), राजनीतिक चिंतन की रूप रेखा, मयूर पेपर बैक्स नोएडा।
2. सिन्हा, मनोज (2013), गाँधी अध्ययन, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
3. जैन, डॉ. पुखराज (2020) प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. वर्मा, वी.पी. (2020), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
5. प्रभु, आर.के. एवं राव, यू.आर. (1994), महात्मा गाँधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।


❑❑❑